बेहतर भूमिका के लिए युवा में सकारात्मक सोच व मजबूत मनोबल का होना जरूरी

ज्ञान सरोवर-माउंट आबू(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान सरोवर में युवा प्रभाग के बैनर तले आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में युवाओं को आध्यात्मिकता, सेवा और संस्कारों का संदेश दिया गया। ज्ञान सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी ने खुले सत्र में कहा कि सेवा भावना और समर्पण से व्यक्ति के भीतर अच्छे गुण विकसित होते हैं। उन्होंने कहा कि चरित्रवान और संस्कारी युवा ही देश की असली ताकत हैं। युवाओं के कंधों पर समाज और देश को नई दिशा देने की ज़िम्मेदारी है। युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि युवा अपने श्रेष्ठ कर्मों और सकारात्मक सोच से समाज में बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज कई युवा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान नहीं पा रहे हैं। ऐसे में अध्यात्म और सही मार्गदर्शन जरूरी है।

युवाओं से समय का सही उपयोग करने का आह्वान: प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. आत्मप्रकाश ने युवाओं से समय का सही उपयोग करने का आह्वान किया। अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानने की बात कही। राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कृति दीदी ने कहा कि सकारात्मक सोच और मजबूत मनोबल से युवा समाज में बेहतर भूमिका निभा सकते हैं। मुख्यालय संयोजक जितेंद्र जावले ने सम्मेलन में मिल रही सीख को जीवन में अपनाने की बात कही। इस दौरान देश के विभिन्न राज्यों से आये युवा सहभागियों ने अपने आध्यात्मिक अनुभव साझा किए।

'ओम शान्ति' शब्द का गहन अनुभव किया

तमिल फिल्म अभिनेता एवं सोशल एक्टिविस्ट विजय विश्वा ने युवाओं को संस्कारित एवं मूल्यनिष्ठ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता व्यक्ति के जीवन में संतुलन, शांति और सफलता लाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने कहा कि यहाँ आकर उन्हें अत्यंत आनंद और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव हो रहा है। उपस्थित लोगों के मुस्कराते चेहरे, सादगीपूर्ण सफेद परिधान और आत्मीय व्यवहार ने एक अलग ही आध्यात्मिक वातावरण का एहसास कराया। विजय विश्वा ने अपने सम्बोधन में कहा कि फिल्म जगत में कलाकार कैमरे के सामने सकारात्मक भूमिका निभाते हैं, जबकि यहाँ लोग अपने वास्तविक जीवन में बिना किसी स्वार्थ के श्रेष्ठ मूल्यों और आदर्शों को अपनाकर प्रेरणादायी जीवन जी रहे हैं। उन्होंने इसे सच्चे अर्थों में 'हीरे जीवन' बताया। उन्होंने कहा कि यहाँ आकर पहली बार 'ओम शांति' शब्द का गहन भाव अनुभव करने का अवसर मिला। यह संस्था जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर विश्व बंधुत्व, भाईचारे और एकता का संदेश दे रही है, जो समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

हार्मनी हाउस आध्यात्मिक जागरूकता और सामाजिक उत्थान का केन्द्र बनेगा

नामसाई-अरुणाचल प्रदेश। **कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ हुआ, जिसके पश्चात् शांति और एकता का प्रतीक माने जाने वाले मोमबत्ती प्रज्वलन और केक काटने का समारोह संपन्न हुआ। उपमुख्यमंत्री ने औपचारिक रूप से यह सुविधा ब्रह्माकुमारियों को सौंप दी और इसके विकास एवं विस्तार के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।** अपने संबोधन में श्री चौना मीन ने शांति, नैतिक मूल्यों, महिला सशक्तिकरण और विशेष रूप से नशामुक्ति कार्यक्रमों में ब्रह्माकुमारियों के समर्पित योगदान की सराहना की। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में वर्तमान परिदृश्य में मादक द्रव्यों के सेवन को एक गंभीर समस्या बताया और कहा कि अनेक प्रयासों के बावजूद अपेक्षित परिणाम अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ब्रह्माकुमारियां नशामुक्त भारत अभियान जैसी पहलों के माध्यम से इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। उन्होंने संगठन से प्रस्तावित सरकारी सहायता प्राप्त नशामुक्ति केन्द्र के संचालन की ज़िम्मेदारी लेने का आग्रह किया। निरंतर समर्थन का आश्वासन देते हुए उन्होंने नामसाई के लोगों के हित में एक बड़े ध्यान केंद्र के निर्माण और हार्मनी हाउस के उन्नयन के लिए अतिरिक्त भूमि दान करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने मौजूदा बीके पाठशाला को आवासीय सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए एक सुनियोजित योजना तैयार करने को भी प्रोत्साहित किया। माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय की अपनी हालिया यात्रा के बारे में बताते हुए, उन्होंने कुशल प्रबंधन की सराहना की और विशेष रूप से हज़ारों लोगों को आसानी से भोजन परोसने वाले बड़े पैमाने के रसोईघर के संचालन से प्रभावित हुए। राजस्थान के माउंट आबू से राजयोगी ब्र.कु. सूरज ने अरुणाचल प्रदेश की अपनी पहली यात्रा का अनुभव साझा किया और वहाँ के लोगों की सादगी और विनम्रता की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हार्मनी हाउस सद्भाव और सकारात्मकता का प्रसार करेगा और लोगों को तनावमुक्त और समग्र जीवन शैली के लिए राजयोग ध्यान अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ध्यान ने कई लोगों को व्यसन से उबरने में मदद की है और सभी से अपने दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता को शामिल करने का आग्रह किया। उन्होंने उपमुख्यमंत्री को माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय का दौरा करने के लिए भी आमंत्रित किया। तिनसुकिया उपक्षेत्र की ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी ने उपमुख्यमंत्री के उदार योगदान और विनम्रता के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया।

ब्रह्माकुमारीज़ - मनुष्य को 'इंसान' बनाने का विश्व विद्यालय

ज्ञान सरोवर-माउंट आबू(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ज्ञान सरोवर परिसर माउंट आबू में यूनिवर्सिटी और कॉलेज एजुकेटर कॉन्फ्रेंस का भव्य आगाज़ हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग द्वारा 'उपाधियों से परे शिक्षा' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये प्रतिष्ठित शिक्षाविदों ने शिक्षा में आध्यात्मिक मूल्यों के महत्व पर अपने अनुभव साझा किए। हिंनजय पालीवाल,अध्यक्ष,गुजरात राज्य संस्कृत बोर्ड ने एक सुंदर उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार हनुमान जी के पास शक्तियां थीं पर वे उन्हें भूल गए थे और जामवंत ने उन्हें उनकी शक्तियों की याद दिलाई, ठीक उसी प्रकार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान समाज की सोई हुई शक्तियों को जागृत करने के लिए जामवंत की भूमिका निभा रहा है। उन्होंने 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को भारत की असली पहचान बताया। डॉ. रीता शर्मा,निदेशक एससीईआरटी,दिल्ली ने स्वीकार किया कि पहले उन्हें लगता था कि केवल थ्योरी पढ़ा देना ही शिक्षा है, लेकिन यहाँ आकर उन्होंने समझा कि किताबों से अलग हटकर बच्चों की समझ के साथ जुड़ना और स्वयं के अनुभव को साझा करना ही वास्तविक शिक्षा है। डॉ. विजय कुमार अरोड़ा,कुलपति, सीडीएलयू,सिरसा ने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी का ज़िक्र करते हुए कहा कि यदि विकसित भारत की गति को तेज करना है, तो शिक्षा में आध्यात्मिकता को शामिल करना ही होगा। उन्होंने चरित्र निर्माण और चेतना पर विशेष बल दिया। डॉ. सुरेश आर.सवानी,निदेशक,भावनगर ने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ मनुष्य को इंसान बनाने वाली एक फैक्ट्री की तरह है। यदि छात्र मानवीय मूल्य सीख लें, तो जीवन में सफलता निश्चित है। प्रो. डॉ. राम चंद्र पुर्वे,पूर्व शिक्षा मंत्री,बिहार ने विद्यालय को प्रकृति व संस्कृति से जोड़ने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यह संस्थान व्यक्ति से मानव बनाने का अद्भुत कार्य कर रहा है। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि शिक्षा वही है जो मनुष्य को बंधनों से मुक्त कर दे। उन्होंने प्रेरणा दी कि जब एक शिक्षक स्वयं राजयोग के अभ्यास द्वारा शांत और सुखी बनता है, तभी वह विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। दीदी ने ज़ोर दिया कि डिग्रियों के साथ-साथ जीवन में दिव्य गुणों का समावेश अनिवार्य है।

- **डिग्रियों के साथ-साथ जीवन में दिव्य गुणों का समावेश अनिवार्य : सुदेश दीदी**
- **ब्रह्माकुमारीज संस्थान समाज की सोई हुई शक्तियों को जागृत करने के लिए जामवंत की भूमिका निभा रहा है : पालीवाल**
- **यहाँ आकर शिक्षा की वास्तविकता को जाना : डॉ. शर्मा**
- **शिक्षा में आध्यात्मिकता को शामिल करना होगा : डॉ. अरोड़ा**

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 101-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शांतिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org